International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

राष्ट्रीय चिन्तन के कवि डा. शिवसागर त्रिपाठी का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार
शोधार्थी
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
Email : dineshchopra41@gmail.com

शोध–आलेख सार : डा. शिवसागर त्रिपाठी संस्कृत क`मूर्धन्य विद्वान् है। संस्कृत व संस्कृति की सतत साधना में सलंग्न डा. त्रिपाठी को संस्कृत संस्कार अपने पिता एवं प्रपितामह से विरासत में प्रापत हुए। संस्कृत मात्र भाषा नहीं वरन् जीवन जीने की शैली है। त्रिपाठी जी ने संस्कृत की इस जीवन–शैली को आत्मसात् किया है। अतः उनका सम्पूर्ण जीवन संस्कृतमय रहा है। सहज व सरल व्यक्तित्व के धनी त्रिपाठी जी को जैसे जीवन की कटुताओं और वैषम्य ने तो मानों छुआ तक नहीं है। अपनी मंद सौम्य मुस्कान तथा संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में वैविध्यपूर्ण रचनाधर्मिता के लिए प्रसिद्ध त्रिपाठी जी अपने समवयस्कों तथा विद्यार्थियों में ही नहीं संस्कृत और हिन्दी जगत् के अध्येताओं के मध्य हमेशा विख्यात रहे हैं और रहेंगे।

मुख्य–शब्द : आत्मसात् ,मंद सौम्य, संस्कृत वेद, साहित्य, धर्म–दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्मशास्त्र।

भूमिका

डा. शिवसागर त्रिपाठी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वेद, साहित्य, धर्म–दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, धर्मशास्त्र, व्याकरण, जैनदर्शन व श्रमण संस्कृति पर उनकी साधिकारिता उनके द्वारा लिखित साहित्य से अनुभव की जा सकती है। उन्होंने आजीवन संस्कृत वाङ्मय को अपनी उर्वरा प्रतिभा से समृद्ध किया है। आपने अर्वाचीन संस्कृत साहित्य को महाकाव्य, नाटक, कथा–साहित्य, शतक काव्य, निर्वचन कोष और अनेकों समीक्षा ग्रन्थों से विस्तारित किया है। राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर से प्रकाशित **'नवोन्मेषः'** पुस्तक के आप सह–सम्पादक तो है ही साह ही उसमें प्रकाशित लेख 'आधुनिक संस्कुत साहित्य में वैयक्तिक पत्र लेखन' आपकी नवनोन्मेषशालिनी प्रतिभा को दर्शाता है। आपके एक अन्य शोध लेख 'संस्कृत–साहित्यपत्रलेखनम्' में आपने महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में शकुन्तला द्वारा दुष्यन्त को लिखे गये पत्र को प्रथम प्रणय–पत्र (मदनलेख) सिद्ध किया है। समय–समय में संस्कृत में किये गये पत्र–व्यवहारों के आधार पर आपका यह दृढ़ मन्यव्य है कि संस्कृत आज भी लोकव्यवहार की भाषा बन सकती है अतः संस्कृत भाषा पर मृतभाषा का आरोप लगाना ठीक नहीं है।

शोध–प्रविधिः इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

डा. त्रिपाठी राष्ट्रिय चेतना व चिन्तन के कवि है। आपकी मौलिक संस्कृत रचनाओं में राष्ट्र–भक्ति का स्वर कूट–कूट कर भरा है। आपकी नाटक 'प्राणाहुतिः' 'नाटयकल्पः' में संकलित एकांकी, भ्रष्टाचारसप्तशती, भ्रष्टायनम्, भ्रष्टताशतकम्, स्वातन्त्रयस्वर्णजयन्तीशतकम्, आधुनिकालापशतकम्, मानवताशतकम्, प्रकीर्णशतकम् आदि रचनायें जहाँ कालजीय भारतीय परंपरा का अनुपोदन करती है वहाँ वर्तमान भारत की विद्रूपताओं, अव्यवस्थाओं और विडम्बनाओं पर तीखे प्रहार करती हैं। त्रिपाठी जी का 'प्राणाहुतिः' नाटक कश्मीर की गौरव गाथा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का दिग्दर्शक है। भारत विभाजन में समय काबायलियों की घुसपैठ और कश्मीरी युवक मीर मकबूल शेरवानी के बलिदान की गाथा वर्णित है इस नाटक में। हमारे राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं का व कश्मीर प्रदेश की समृद्धि का वर्णन करते हुए अपनी

राष्ट्रभूमि के प्रति गौरव की भावना को जगाने का कवि ने प्रयास किया है। प्राणाहुतिः में देश के वीरों की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि–

शूरा अजेयबलभारसमन्वितेषु, देशाभिरक्षक निशाचर भक्षकेषु
श्रेष्ठाः स्वकर्मसु रताः कुशला हितायासूनां पणन्त इह दुर्गविपत्तिकारे।।

(प्राणा. 14)

'प्राणाहुतिः' नाअक के अनेक स्थल दर्शकों के मर्म का स्पर्ष करते हैं। शेरवानी के अंतिम संवाद और राष्ट्र के लिए मर मिटने का संकल्प हर भारतीय को देश पर मर–मिटने की प्रेरणा देता है। इस नाटक में कवि ने देश प्रेम व भारतीयता के साथ–साथ शाश्वत मानवीय मूल्यों का भी समर्थन किया है। कवि किसी वर्ग विशेष या किसी सम्प्रदाय विशेष का पक्षधर नहीं है, वह तो चिरन्तन शाश्वत मानवधर्म का समर्थक है। यथा

नेस्लामधर्मो न च यीशुधर्मो न हिन्दुधर्मो ह्यपरे न कोऽपि।
मया गृहीतो जनताहितार्थम् मनुष्यधर्मः सुकरो विशालः।।

(प्राण.24)

नाट्यकल्पः एकांकी संकलन में पद्मिनीरत्नम्, इदं न मम, शरणाशरणम् और हुतात्मसौहार्दम् चार एकांकियों का संकलन हैं। पद्मिनीरत्नम् एकांकी पं. मोहनलाल शर्मा पाण्डेय के ऐतिहासिक उपन्यास पद्मिनी का नाटय रूपांतरण है। इस एकाकी में उल्लाउद्दीन द्वारा पद्मिनी के सौन्दर्य की चर्चा सुनकर उसको पाने के प्रयास और पद्मिनी का अन्य स्त्रियों के साथ जौहर वर्णित है। डा. त्रिपाठी ऐतिहासिक कथा को नाटकीय रूप प्रदान करने में पूर्ण सफल रहे हैं। **डा. जगदीश्वर प्रसाद के अनुसार** ''पद्मिनी के प्राप्त करने के प्रयत्न में सफल होने पर भी उसके हाथ चित्तौड़ का ध्वंस और पद्मिनी की चिता की राख आती है। उस समय उल्लाउद्दीन के प्श्चाताप के प्रभाव की वृद्धि के लिए एकांकीकार ने प्राची, प्रतीची, उदीची और अवाची चारों दिशाओं से उल्लाउद्दीन के प्रति धिक्कार ध्वनियों का प्रयोग किया है। उल्लाउद्दीन अपने कुकृत्यों पर पश्चाताप करता है–'हा धिक्! किं मे मनोरथपूर्तिः पद्मिनी भस्मसात् अभूत्। हा यस्य स्त्रीरत्नस्य कृते मया बहबो वीराः मारिताः नैके ग्रामः नष्टीकृताः परमद्य कि प्राप्तम्? दूसरी ओर चारो दिशाएं एक–एक करके धिक्कारती है– 'रेयवनापसद्! वीरवरलीलास्थानं चित्तौड़दुर्गं विनाश्य किं लब्धं त्वया? किं लब्धं? अन्त में चारों दिशाएं उसे एक साथ धिक्कारती है।'' इस प्रकार नाटकीय कौशल से पूर्ण यह एकांकी देश के गौरव और राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण हैं।[1]

'इदं न मम' एकांकी स्वार्थपरायणता से दूर रहने और परोपकारपरायणता के महत्व को प्रस्तुत करती है। **रणशरणमृ** एकांकी महाराज शिवि के पौराणिक आख्यान पर आधारित है। राजा शिवि का एक क्षुद्र वाणी कपोत को शरण देना यह दर्शाता है कि प्राणिमात्र का संरक्षण ही राजा अथवा प्रशासक का कर्त्तव्य है। एकांकी में डा. त्रिपाठी की रंग चेतना प्रबल है इसकी रचना उन्होंने रेडियो और रंगमंचीय दोनों दृष्टियों से की है और दोनों के अनुरूप रंगनिर्देश भी दिये हैं। साथ ही परम्परा का निर्वाह भी किया है।[2]

चतुर्थ एकांकी 'हुतात्मसौहार्दम्' में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कश्मीर की समस्या से संबंध है और भकबूल शेरवानी के बलिदान की कथा है। सम्पूर्ण एकांकी राष्ट्रिय चेतना को जाग्रत करने और भारतीय संस्कृति के उदात्त जीवन मूल्यों को स्थापित करने की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण करती है। देशभक्त शेरवानी की आततायियों को दी गई चेतावनी राष्ट्रिय एवं वैयक्तिक चेतना का सुन्दर उदाहरण है–

बन्दिनं मां कुरूध्वं वा, जिह्वां में वा निकृन्तत।
विचारान् तु मदीयान् भो! पाशीकर्तुं न शक्नुत।।

राष्ट्रीय चिन्तन के कवि से तात्पर्य यह नहीं है कि राष्ट्र' की प्रशसा व भौगोलिक सुन्दरता में अनेकानेक पृष्ठ लिखे जाये। राष्ट्रिय चिन्तन से अभिप्राय राष्ट्र को वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सभी प्रकार की स्थितियों के चिन्तन से हैं। देश में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं, रूढ़ियों और विषमताओं का वर्णन करना ही कवि का दायित्व नहीं है वरन् उन विषमताजन्य परिस्थितियों से उबरने के लिए समाज को दिशा–निर्देश देना भी कवि का दायित्व है। ऐसे कवि या साहित्कार ही सही अर्थों में 'राष्ट्रिय चिन्तन के कवि' होने का हकदार हो सकता है। डा. राधावल्लभ त्रिपाठी अपने लेख 'समकालिक संस्कृत साहित्य में भारतीयता' में लिखते है कि 'भारतीयता कोई स्थिर और जड़ अवधारण नहीं हो सकती। भारत राष्ट्र जिस तरह निरन्तर विकासमान रहा है, उसी तरह भारतीयता की परिधि भी विस्तीर्ण होती रही है।.....भारत नाम संकीर्तन की अपेक्षा भारत जिन मूल्यों और मूल अभिप्राय पर अवस्थित है, उनका रचनात्मक निरूपण भारतीय की अभिव्यक्ति हो सकता है।'[3] इस दृष्टि से डा. त्रिपाठी की पसम्पूर्ण कृतियां वर्तमान भारत में व्याप्त रूढ़ियों व अंधविश्वासों का पुरजोर विरोध करती है तथा नवीन का संधान भी करती है।

डा. त्रिपाठी के कथा संकलन 'कथाकल्प' की कहानियाँ आज की यथार्थ स्थिति का चित्रण करती हैं। **ललित–कलित–फलितम्,** सुकन्या, अशिक्षिता, वन्ध्या, पुस्तककृमि, हुतात्सौहृदयम् तथा कृष्णसर्पस्स चातुर्यम् आदि कहानियाँ विविध विषयों पर आधिारित हैं। इन कहानियों के माध्यम से कवि समाज को संदेश देना चाहता है। यथा 'ललित–कलित–फलितम्' में धनलोलुपता की वृत्ति और शेयर्स के व्यसन से दूर रहने, सुकन्या कहानी में दहेज प्रथा के उन्मूलन, 'अशिक्षिता' में समाज में नारी की महत्ता को प्रतिष्ठापित करना, 'वन्ध्या' बहू की दयनीय स्थिति का और 'प्रस्तुककृमि' पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान के महत्व का पतिपादन करती है। 'कृष्णसर्पस्य चातुर्यम्' बालकथा है जो सहसा किसी पर विश्वास नहीं करने का निर्देश देती है। इसी प्रकार 'कथाकृति' में संकलित हिन्दी कहानियाँ जीवन की सच्चाईयों से रूबरू कराती हैं। इन कथाओं में सामाजिक कुरीतियों का विरोध, समसामयिक परिवेश का चित्रण तथा देशभक्ति पूर्ण मूल्यों की स्थापना है।

'आधुनिकालापशतकम्' एक व्यंग्यात्मक शतककाव्य है। आधुनिकता की दौड़ में हमारे प्राचीन मूल्य, मान्यतायें, आदर्श और हमारी आचार पद्धति सभी पुराने माने जाने लगे है। डा. कलानाथ शास्त्री लिखते हैं कि– ''शतकपरम्परा में बिल्कुल गये भावबोध, नयें शिल्प और नये कथ्य की आवंतारणा करते हुए गई कविता के एक नूतन प्रयोग के रूप में डा. शिवसागर त्रिपाठी द्वारा रचित 'आधुनिकालापः' काव्य एक विशिष्ट प्रकार के मुक्तक संकलन के रूप में अवतीर्ण हो रहा है। संस्कृत के प्राचीन शतकों में जिस प्रकार काव्य की एकरूपता के सूत्र से बंधे मुक्तक संकलित होते थे, उसी प्रकार इसमें विषयवस्तु के वैविध्य के बावजूद समूचे कथ्य को एकसूत्र में बांधने वाली एक पंक्ति है– **'मूर्खोऽयमित्याधुनिकालपन्ति'** जो सभी पद्यों को एक पहचान देती है। संस्कृत का पारम्परिक छंद होते हुए भी इसका कथ्य और परिवेश तथा शिल्प नया है और नवीनतम स्थितियों का चित्रण करने के नाते इसे नवीन युगबोध और आधुनिक भावबोध का काव्य भी कहा जा सकता है, यद्यपि इसमें पर्यन्तत आधुनिकता बोध को गरिमा नहीं, लघिमा ही प्रदान की गई है।[4]

इस प्रकार 'आधुनिकालाप':' शतककाव्य में कवि ने प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार जीवन जीने वालों को तथाकथित आधुनिकों के द्वारा मूर्ख कहा जाने पर व्यंग्य किया है तथा भारतीय शाश्वत मूल्यों के प्रति अपनी दृढ आस्था को व्यक्त किया है। स्वातन्त्रय स्वर्ण जयंती शतकम्' में स्वतन्त्रता प्राप्ति के 50 वर्ष पूरे होने पर स्वर्ण जयन्ती समारोह पर लिखे गये 103 पद्यों का सकलन हैं। 'मानवताशतकम्' में मानवता से संबंधित पद्य संकलित है। 'मानवताशतकम्' में मानवता से संबंधित पद्य संकलित है। 'प्रकीर्णशतकम्' में समय–समय पर जो पद्य वार्तालाप के दौरान लिखे जाते रहे, उनका संकलन है।

आज भ्रष्टाचार भारत की ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की ज्वलन्त समस्या है। इनका 'भ्रष्टोपनिषद्' शीर्षक से सर्वप्रथम भारतीय में क्रमिक प्रकाशित हुआ था। उसके बाद भ्रष्टाचारसप्तशती, भ्रष्टाचारसाहस्री, भ्रष्टायनम् आदि अनेक नामों से इनकी रचनायें प्रकाशित हुई। 'भ्रष्टाचासप्तशती' के 725 श्लोकों में भ्रष्टाचार की समस्या का विशद वर्णन है। भ्रष्टाचार जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। भ्रष्टाचार से सम्पूर्ण मानवता पीड़ित है। भ्रष्टाचारसप्तशती' के 725 श्लोकों में भ्रष्टाचार की समस्या का विशद वर्णन है। भ्रष्टाचार जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। भ्रष्टाचार से सम्पूर्ण मानवता पीड़ित है। आज के युग में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार हो गया है। आज हर व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता के साथ स्वार्थपूर्ति में संलग्न है और मनुष्य की स्थार्थमूला प्रवृति ही भ्रष्टाचार को पोषित व पल्लवित कर रही है। कवि दिन प्रतिदिन बढ़ रहे भ्रष्टाचार से दुःखी है, वे जनान्दोलन के माध्यम से इसे समाप्त करने का आह्वान करते हैं, अन्यथा वह पवित्र देश अन्धकार के गर्त में गिर जाएगा।

जनान्दोलनरूपेण कार्यस्य विनाशनम्।
अन्यथा पूतदेशोऽयमन्धगर्ते पतिष्यति।।

वर्तमान युग अर्थप्रधान है। अधिक महत्त्वकांक्षी होने तथा अधिक से अधिक धन कमाने की होड़ ने मनुष्य को भ्रष्ट बना दिया हैं। अतः भ्रष्टाचार का मूल धन ही है–

भ्रष्टाचाराद् धनावाप्तिः, भ्रष्टाचारों धनेन च।
भ्रष्टाचारों धन किंच, पर्यायत्यं समाश्रिते

भ्रष्टाचार व धन एकदूसरे के पर्याय हो गये है। भ्रष्टाचार की बढ़ती इस अवाधित गति को रोकना आवश्ययक है। सुविधाशुल्क व उपहारों के रूप में दिया जाने वाला उत्कोच (रिश्वत) नामक जीवाणु मनुष्य की शिराओं में प्रवाहित हो रहा है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक यहाँ तक कि शैक्षिक क्षेत्र भी भ्रष्टाचार से बचे हुए नहीं हैं। भ्रष्टाचार के बढ़ते हुए इस विषाणु को रोकने के लिए नियम, संयम, दान तथा इन्द्रिय निग्रह जैसे आन्तरिक उपायों के साथ–साथ त्रिपाठी जी ने भ्रष्टाचार–उन्मूलन के बाह्य उपाय भी सुझाये हैं। इनमें प्रमुख है जनता का मत। जनता अपने मत का उपयोग कर भ्रष्ट नेताओं को हटा सकती है। वर्तमान में चुनाव के इस दौर में कवि की सम–सामयिक दृष्टि वरणीय है–

जागृहि नागर! भ्रातर्महर्षिमनुवंशज।
भ्रष्टाचारविनाशाय, मतशस्त्रं समाश्रय।।

मत शस्त्र के प्रयोग के अलावा संविधान के मौलिक अधिकारों में संशोधन, गोपनीय विषयों को छोड़कर कार्यों में पारदर्शिता, अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का निर्वहण, स्वयं की गवाही देने का अधिकार आदि अनेक उपाय भ्रष्टाचार के निरोध के लिए बताये गये हैं। भ्रष्टाचार के कारण धनी और धनी तथा निर्धन अधिक निर्धन होते जा रहे हैं। अतः सामाजिक व आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, आतंकवाद जैसी समस्याओं के बढ़ने का मूल कारण भ्रष्टाचार ही है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कवि दण्डनीति का भी समर्थक है:

भ्रष्टाः यत्र दण्ड्यन्ते, सुशान्तिस्तत्र दृश्यते।।
दण्डापमानभीत्या तेऽनपेक्षित न कुर्वते।।

देश में शांति व सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए दण्ड व्यवस्था आवश्यक है। जिन देशों में कठोर दण्ड का विधान है वहाँ यह तो नहीं कह सकते कि भ्रष्टाचार समाप्त हो गया है किनतु कुछ अंकुश आवश्य लगा है। भारत में भी दण्ड व न्याय व्यवस्था के पुनः आलोड़न की आवष्यकता है। डा. त्रिपाठी ने वर्तमान भारत में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं की और पाठक का ध्यान आकृष्ट ही नहीं कराया, उनके निराकरण व शमन हेतु अनेक उपाय भी सुझाये हमारे संस्कारों, अधिकारों व मूल्यों के प्रति जागृत भी करती है। आज के

भ्रष्ट नेताओं, प्रशासकों, साहित्यविदों तथा देश के हर क्षेत्र में कार्यरत भ्रष्ट मनुष्यों को निर्देशित करने के लिए कवि की यही कृति एक मशाल का काम करेगी। अंत में भ्रष्टाचार के शमन, श्रीवृद्धि व विश्वशांति के लिए कामना करते हुए कवि कहता है कि–

भ्रष्टाचारः शमं यातु, राष्ट्रश्रीवर्धतां सदा।
मानवता प्रदीप्तऽस्तु, विश्वशांतिर्भवेद् ध्रुवा।

निष्कर्षतः कह सकते है कि डा. शिवसागर त्रिपाठी राष्ट्रिय चिन्तन व चेतना के कवि है। उन्होंने देश की ज्वलन्त समस्याओं को उठाकर उनके समाधान भी दिये हैं। साहित्य कवि की अन्तश्चेतना की अभिव्यक्ति होता है अतः वह समाज को बदलने की ताकत रखता है। सद्मार्ग पर प्रवृत्त करने का काम करता है। वर्तमान अव्यवस्थाओं स`उपजी कवि की पीड़ा पाठकों के रक्तबीजों में क्रान्ति का शंखनाद् फूंकने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी ऐसा मेरा मन्तव्य है। भ्रष्टाचार के प्रति बढ़ता आक्रोश। निश्चितरूपेण समाधान के नये द्वार खोलेगा। दुष्यन्त कुमार के शब्दों में:

हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिये,
इस हिमालय से कोइ गंगा निकलनी चाहिये।
मेरे सीने में नही `तो तेरे सीने में सही
कहीं भी हो आग लेकिन जलनी चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 12 पृ.65
2. नाट्यकल्प, पृ. 66
3. दृक्. 14 एवं 15, पृ. 7
4. शिवायनम्. पृ. 149
5. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 12 पृ.66
6. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 12 पृ.65
7. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 13 पृ.50
8. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 13 पृ.6
9. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 15 पृ.13
10. नाट्यकल्पः/एक सफल एकांती संकलन, जगदीश्वर प्रसाद दृक् 15 पृ.61